

पुस्तक संख्या २७०

दफ्तरी नं ८


इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

हस्त संग्रह :

ग्रंथ क्रमांक ५२१० (२१०)

ग्रंथ नाम पुस्तक अभंग.

विषय मराठी काव्य.



Joint project of the "Jat Project", Mumbai.

Prjawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

क्रमांक १७

५१६/५२६०

द. नं. १२ पैका १७

मराठी राजवाडे बाड

काव्य

अंक २२

शाखा

अनेक

ग्रंथनाम

कवींच्य

गाथा संग्रह

ग्रंथकार

वृकशिाम, रा

सानेश्वर, नामदेव, जती

काल

१८०४ न १९०४

व इतर अनेक संदेशिका

शिक

स्थल



Digitized by eGangotri
The Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(1)

॥ नकाफिरुदूर ॥ नकाफिरुदूर ॥ हरिहाअसेजवळितरिपहातेपंढरपूर ॥ ४० ॥
॥ भृगुऋषिआणिकोस्तुभमणीसककेशोभेजाचाऊर ॥ असाजोशोभेजाचा ॥
॥ ऊर ॥ नका ॥ १ ॥ पंढरिलानिघताचिउतरतोयमदूताचानूर ॥ तेक्षणियमदू ॥
॥ ताचानूर ॥ नका ॥ २ ॥ आषाढीसवसततहियेतीवारकन्याचेपूर ॥ जेविनदी ॥
॥ वारकन्याचेपूर ॥ नका ॥ ३ ॥ वैष्णवादिश्रीहस्थिनुचेबहुतउमटलेखूर ॥
॥ पूजितजनबहुतउमटलेखूर ॥ नका ॥ ४ ॥ राजाराममीलीनप्रसादिकसां ॥
॥ दुनिधनदुरदुर ॥ जाशर ॥ नकाफिरु ॥ ५ ॥ संपूर्ण ॥

॥ पद

नादरतादिमतादीमतधेनादिमतननन ॥
तारतदरदादि ॥ तरकडुधुमकडकडकड
कडकडकडकडकडकडकडकडकडकड ॥

देवा

॥ नमितसेरमेब्धिकंन्येनमितसेरमे ॥ वैष्णविहोसिलकायमृकसम ॥ घड ॥
॥ घडघडघडघडघडघडघडघडबोलुनिसुखीकर ॥ नमि ॥ ४ ॥ करधृतरखेटका ॥
॥ मातुलिंगसत्यानपात्रपारदेभवाचल ॥ गउगउगउगउगउगउगउगउकोस ॥
॥ केसमुधर ॥ नमितसे ॥ १ ॥ करधरहरशिवकरमकरअघजोवरिनसे ॥
॥ यमप्रदर्शन ॥ जात्यावरवरसरजनननीकरालकायधरालकाय ॥
॥ हारालकाय ॥ नमि ॥ २ ॥ राजारामीरतप्रसादिकदेह ॥ हानसेविया ॥

१८३५

॥ क्या खुब मधुवन बीच बाज के नादन से अंबर गर्जे ॥ ततथै ततथै धिमिकी धि ॥
 ॥ मिकी धीं गिरिधर की मुरली बाजे ॥ ४० ॥ चकित थकित सब देव ड्रुवेत बधुनी ॥
 ॥ जसूनि जहरि मुरली की ॥ गोपग बालन भूल भई जद सूदन ही कछु तन मन की ॥
 ॥ दौर चली अरवभान कुमारी लेत बल य्या हरि मुरली की ॥ मो ज भई जद ब्रंदा बन मो ॥
 ॥ बात नही कछु कहने की ॥ मुरहर मुरली भागे ड्रुवे जद और बात की आवाजे ॥ ॥
 ॥ ततथै ततथै धिमि ॥ १ ॥ मुर मु गु ट प ॥ न वि र चि त कान न कुंड ल बन माला ॥
 ॥ सजल जल दकारंग ॥ ग पर पे ॥ ल ग ग न मो तारा मंडल ॥
 ॥ वैसी है बन माला ॥ काटि चं ॥ ग व त मा मु नि बो ला ॥ च र न क ॥
 ॥ मल मो नी ब्रं द की क न न न ॥ २ ॥ सु र ज कु मारी चं च ल थी ॥
 ॥ सो थी र भई सु न ने क ॥ रा ग रं ग प ॥ ना द नि क ल ता ज मु ना कू ॥ त ॥
 ॥ क व क्त पर शेष डु ल त है प ताल व ॥ अ व तार कि स न ज द प्र ग ट ड्रु वा ॥
 ॥ है गो कु ल कू ॥ क ह तौ हे ॥ न की नो ब द बा जे ॥ त त थै ॥ ३ ॥
 ॥ इत्यमृत कविविरचिता मुरली समाप्त ॥ ४ ॥ २ ॥ ॥ श्रीराम ॥



५१११७

(1B)

॥ पदपंढर पूर प्रसादवा ॥

॥ कारभारटाकुनिरामस्मर०॥३॥ समाप्तमस्तु॥६॥ राम्॥५
॥ अष्टपद्याप्रारंभ॥

॥ गुर्जरीरागे एकतालीताले अष्टपदीदशमा१०॥ ॥

॥ रतिस्त्रुखसारे गतमभिज्ञे मदनमनाहवेशं ॥ नकुरुनितंवि ॥
॥ निगमनविलंबममनुष्ये धीरसमीरे यमुनातीरेव ॥
॥ सतिवनेवनमाफी ॥ गे रमर्दनचंचलकरयुगशा।
॥ ली॥६०॥ नामसमेतं क यते मृदुवणुं ॥ बहुमनुते ॥
॥ तनुतेतनुसंगतपवन रणुं ॥ धीरि०॥२॥ पततिपत ॥
॥ त्रेविचलितपत्रे शंकितभवदुपथानं ॥ चयतिशयनंसचकित ॥
॥ नयनंपश्यति तवपंथानं ॥ धीरस०॥३॥ मुखरमधीरं त्यजमंजी ॥
॥ रंरिपुमिवकेलिसुलोकं ॥ चलसखिकुंजंसतिमिरपुंजंशील ॥
॥ यनीलुनिचोकं ॥ धीर०॥४॥ उरसिमुशारे रूपहितहारे घनइव ॥
॥ तरलबलाके ॥ तडिदिवपीतेरतिविपरीतेराजसिस्तुक्तवि ॥
॥ पाके ॥ धीर०॥५॥ विगलितवसनंपरिलुत्तरशूनं घटयजघ ॥
॥ नमपिधानं ॥ किसलयशयनेपंकजनयनेनिधिमिबहर्षनिधा ॥

॥ नं ॥ धीर ॥ ६ ॥ हरि र भि मानी र ज नि रि दानी मि य म पि या ति वि रा ॥
 ॥ मं ॥ कुरु म म व च नं स त्व र र च नं पू र य म धु रि पु का मं ॥ धी र ० ॥
 ॥ ७ ॥ श्री ज य दे वे क्त त हरि से वे भ ण ति पर म र म णी यं ॥ प्र मु दि ॥
 ॥ त हृ द यं हरि म ति स द यं न म त सु क्त क म नी यं ॥ धी र स मी रे ०
 ॥ ६ ॥ समाप्ता ॥ श्री राम् ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ पद ॥

॥ अ ता ता रि ता रि म ला श्र ॥ ५ ॥ पंच म दी कृ ष्णा ती र सं ॥
 ॥ ग म हा ब हु स द य ॥ क र्य ॥ वृ क्ष शो भ ती ॥ अ ता ० ॥ १ ॥
 ॥ का मा दि क मा रि ती म ज क्र ॥ ता ळि ति म ज ॥ पंच वि ष य अ ॥
 ॥ ति डु र्द र ब हु त श्र म बि ते ॥ नृ ज वा चु नि चिं ता म णि प्रा ॥
 ॥ र्थि ना अ णि क को णि ॥ धा व स र णा पा व ह रे नृ सिं ह सर स्व ती ॥ अ ता ॥
 ॥ ता रि ता रि ता रि म ला श्री गुरु य ती ॥ ३ ॥ समाप्त ॥ राम् ॥ ४ ॥ ७

॥ पद ॥

॥ ती मा य मा श्री पं ड री सि पा हि ली ॥ ती मा य ० ॥ ४ ॥ जो जो ये र्ज जे कां ॥

॥ तरावयासाठी ॥ कटिकरठे उनिउभीराहिली ॥१॥ श्रीभाचीप्र ॥
 ॥ तिज्ञासत्यकरायासाठी ॥ सव्यसाचिपासिआणवाहिली ॥२॥ र ॥
 ॥ णीरुक्मिणिरुक्मवधाभ्यालीरुक्मिणी ॥ अमृतवचनेकुरवाळि ॥
 ॥ ली ॥३॥ ॥ छ ॥ ट ॥ राम ॥ ॥ छ ॥

पद ॥

॥ इतुकेदेमजलादेमजला ॥ मानतसेरतुजला ॥४॥ संतसमा ॥
 ॥ गमअर्चा ॥ सारसाररु ॥ धुरुपमुदेही ॥ आत्माना ॥
 ॥ त्मविवेकपाही ॥ ॥ गुरु ॥ ॥ ऐसीबुडीदेवाद्यावी ॥ ॥
 ॥ कीर्तनपुराणश्रवणे ॥ दे ॥ कादेणे ॥४॥ दासत्प्रणेतूदे ॥
 ॥ घा ॥ जैसाप्रारव्यावाठेवा ॥ ॥ ॥ राम ॥६॥ ॥ छ



पद ॥

॥ दारखवीदिव्यपायदयानिधे रामा ॥४॥ हीनदीन आसतुझी कासपूर्ण ॥
 ॥ आत्मा ॥ धरावयापाहतसेअगाघनश्यामा ॥ दारखी ॥१॥ मायवापवं ॥
 ॥ धुगोत्रमित्रतूचिआत्मा ॥ तुजबीणकोणअसेसांगसरख्यारामा ॥ दा
 ॥ खवी ॥२॥ सरवया आनंदतनयत्प्रणे गुणग्रामा ॥ कृीणभागहरी ॥
 ॥ त्वरेत्वरेपुसोनियाघामा ॥ दारखवी ॥३॥ राम ॥ १० ॥ छ ॥ ॥

(6) ॥४॥

॥ पद ॥

॥ वदनामचितेसार ॥ रसनेवदनामचितेसार ॥ ४० ॥ गोरसमधुरसइक्षु ॥
॥ रससुधारस ॥ नवरसतेहिअसार ॥ रसने ० ॥ १ ॥ तळमळसीकितिके ॥
॥ रितीकीहे ॥ वेडेवेडेचार ॥ रसने ० ॥ २ ॥ भक्तमयूररुपाघनराघव ॥ उघ ॥
॥ डिलमुक्तिद्वार ॥ रसने ० ॥ ३ ॥ राम ॥ ११ ॥ छ ॥

॥ नरतनुहेनकेसाचप्रमताव ॥ तनसंपत्तिविकार ॥ धरुनिफार ॥
॥ अहंकार ॥ करुनिकनकअ ॥ तीडुशाळा ॥ नरतनु ० ॥ १ ॥ सां ॥
॥ उनिहरिरुपाघनासि ॥ आव ॥ नासि ॥ इचिमृकनीधनासि ॥ ॥
॥ नुमजाअवाला ॥ नरतनु ० ॥ जंगलपणउपाय ॥ धरारेसहु ॥
॥ रुचेपाय ॥ सकळसाधनोउपाय ॥ अदजगदीशाळा ॥ नरतनु ० ॥ ३ ॥ ॥
॥ समाप्त ॥ ॥ १२ ॥ छ ॥ ॥ राम ॥ ॥ ४ ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ पद ॥

॥ उडवाशांतवनकरजात्यागोकुलवासिजनाचे ॥ ४० ॥ बानंदयशोदा ॥
॥ मातामजसाठीत्यजितिरुप्राण ॥ त्यागुनीप्रपंचाफिरतीमनिउदास ॥

॥ शनो शन ॥ अन्न पाणिस्यजिले रडती अति दुःखित झाले दीन ॥ चालू ॥ ज ॥
 ॥ न्मलो तैद्रु निझटले ॥ मजला गीति कति कतु टले ॥ कटि रवां दे वाह ताघ ॥
 ॥ टले ॥ आटले रक्त दे हाचे ॥ उडू वा ॥ १ ॥ आइ पबो स्यजुनी बाके मज संगे ॥
 ॥ खेळत होती ॥ गोड शशि दोऱ्या अणुनी आवडिने मज ला देती ॥ रात्रं दि
 ॥ सफिरले मागे दधि गोरस चोरु येती ॥ चालू ॥ मी तोडुनि आलो तटका ॥ ॥
 ॥ तो जिवाला गला चटका ॥ मज विषया युग सम घटका ॥ आठवते प्रेम ॥
 ॥ ज्याचे ॥ उडू ॥ २ ॥ पति सुता विगदधने स्वजिले मज वरती धरुनी मम ॥
 ॥ ता ॥ मानिले तुडू अर्धवर्ग मज संगे निश्चर मती ॥ मद्दत चिन त्या गोपी ॥
 ॥ नेत्रांतरिले उनि समता ॥ ॥ ॥ हि मनि डगल्या ॥ दृढ निश्चय ॥
 ॥ धरुनी तगल्या ॥ बहु धार ॥ ॥ भंग कडे मध नोरथ जांचे ॥
 ॥ उडू वा ॥ ३ ॥ हस्ति आहे म्हा ॥ ॥ टता चित्या सांगावे ॥ सांगकी ॥
 ॥ समस्ता पुशिले प्रकृति नर त्या ॥ ॥ तो या ज्ञान ज्ञाने सांगकी शोक ॥
 ॥ त्यजावे ॥ हे कार्य नहे तुजने ॥ जावे वेग ॥ हे मध मुनी श्वर सां ॥
 ॥ गे ॥ त्या नपवे ज्ञान जयाचे ॥ उडू वा ॥ ४ ॥ ॥ समाप्त ॥ ॥ ११३ ॥ राम ॥

॥ पद ॥ आनंदतनय ॥

॥ कारे नाठ विसी कमल नयन या स्रुदेव ॥ ११ ॥ जपति जया संत सनक ॥ सक ॥
 ॥ लजना जननि जनक ॥ कारे ॥ कलुष हरण विमल चरित ॥ करुनि निजानंद भ ॥
 ॥ रित ॥ कारे ॥ २ ॥ विचरे आनंदतनय ॥ हृदयि धरुनि नंदतनय ॥ कारे ॥ ३ ॥ ॥
 ॥ संपूर्ण मस्त ॥ ११ ॥ १४ ॥ ॥ राम ॥ ११ ॥ ॥ ११ ॥ राम राम राम ॥ ॥

(8)

॥ ५ ॥

॥ पद ॥

॥ कशाळा माळगळा घालावी ॥ ४ ॥ हृदयिकाम हरिनाम नये मुखि ॥ धामध ॥
॥ नासीमन लावी ॥ कशाळा ॥ १ ॥ भस्मलसिततनुकंश्मलजितमति ॥ होउ ॥
॥ निचिनन तोलावी ॥ कशाळा ॥ २ ॥ जगमूढपुढपुढ अधरपुढि ॥ कुटेजना ॥
॥ चीबोलाची ॥ कशाळा ॥ ३ ॥ विद्वत्कर्मजनीनसतानर ॥ तनूरवरांशी ॥
॥ तोलावी ॥ कशाळा ॥ ४ ॥ ॥ १ ॥ ॥ रामरामराम ॥ ३ ॥

॥ २ ॥

॥ लंकेहूनी अमोघजाता ॥ रा ॥ सीता ॥ हनुमंते अंजनिमा ॥
॥ ता ॥ दाखविली रामा ॥ १ ॥ नरकर ॥ कायबोले रघुवीर ॥
॥ माते तुझिया कुमरे थोर ॥ उपकार केली ॥ २ ॥ सीता शुद्धी येणे केली ॥
॥ लक्ष्मणाची शक्ती हरिली ॥ लंका जाळुनि निर्दाकीली ॥ राक्षससे ॥
॥ ना ॥ ३ ॥ अही रावण मही रावण ॥ घात करिती अमुचा प्राण ॥ शक्ति
॥ रूपे दोघे जण ॥ वाचविले येणे ॥ ४ ॥ हनुमंताची कीर्ती गादी ॥ वर्णा
॥ वीजीतितुकी थोडी ॥ तुझिया उदरा येउनि प्रौढी बद्धतची केली ॥ ५ ॥
॥ माते तूझा उदरी जाण ॥ हनुमंत जन्मले रत्न ॥ माझे सर्व रामायण ॥

॥ याचे नियोगे ॥ ६ ॥ ऐकुनि पुत्राचि ही रव्याती ॥ माता तुच्छ मानीचि ॥
 ॥ ची ॥ अर्थ काबार घूपती ॥ वाहसी ओसे ॥ ७ ॥ हाकामास्या उद ॥
 ॥ रीं आला ॥ गर्भी हनी नाहि गळा ला ॥ आपण असता श्रीरामा ॥
 ॥ ला ॥ कष्टविले येणे ॥ ८ ॥ मास्या दुग्धानिये प्रौढी ॥ कळिकाळा ॥
 ॥ ची नरडी मुरडी ॥ रावणादि कबाडुडी ॥ घुंगुर्ती जैसी ॥ ९ ॥ अ ॥
 ॥ सत्यवाटे रामा बोली ॥ दुग्ध धारणी पोडी ली ॥ पर्वत उदरीं रवीं ॥
 ॥ चुनि गेली ॥ त्रिखंड पाहा ॥ अज्ञानाची जी रावण वधुनी ॥ ज ॥
 ॥ री अणितारा घवपली ॥ स्तमने ॥ उत्कास हो ॥
 ॥ ता ॥ ११ ॥ पाहुनि ती च ॥ श्वर्यवाटले रामा ॥ १० ॥
 ॥ मदासे धरिला प्रेमा ॥ श्री ॥ ११ ॥ श्रीराम ॥ ११ ॥



॥ पूर्ण ब्रह्म होय रे वृणु आता काय रे ॥ नंद जाचा तात जाणा यशोदाती मा ॥
 ॥ यरे ॥ १२ ॥ ब्रह्मांडाचा कोटी रे ॥ साठविये त्या पोटी रे ॥ यशोदा त्या घकुनि ॥
 ॥ या ॥ पाजि दुधाची वाटी रे ॥ पूर्ण ॥ १३ ॥ ब्रह्मनिर्विकार रे ॥ नाही ज्या आका ॥
 ॥ ररे ॥ गौळीयाच्या घरी तोची ॥ दिसतो साकार रे ॥ पूर्ण ॥ १४ ॥ क्षीरसिंधू ॥
 ॥ वासी रे ॥ लक्ष्मी ज्याची दासी रे ॥ अर्जुनाची घोडी धूता ॥ लाज नाही त्या ॥
 ॥ सी रे ॥ पूर्ण ॥ १५ ॥ पूर्ण ब्रह्मानंद रे ॥ सर्व स्रवाचा कंद रे ॥ श्रीधर स्वामी ॥
 ॥ लागी हाचि ॥ लागला से छंद रे ॥ पूर्ण ॥ १६ ॥ संपूर्ण ॥ राम ॥ १६ ॥ ११ ॥

(10)

॥६॥

॥पद॥

॥ भजभजभवजलधिमाजिमनुजाशिवाला ॥ ५० ॥ धरिनिरुदृढ ॥
॥ चरणकमळ ॥ घडिभरितरि करुनिविमल ॥ तरिचसकलपापशम ॥
॥ ल ॥ त्यजरेभवाला ॥ भज ॥ १ ॥ सांडुनियाविषयवमन ॥ झडकरिक ॥
॥ रिषडरिदमन ॥ पूनिमनहेव ॥ रिदमन ॥ गिरिजाधवाला ॥ भज ॥
॥ २ ॥ सावधहोकरिसिकाय ॥ शंकरयत्न ॥ पमाथ ॥ चिंतुनिकविशयपा ॥
॥ य ॥ हृदयीनिवाका ॥ भ ॥ १९ ॥ ७ ॥ राम ॥ ६ ॥

॥ अहो रामारुष्या गावे ॥ १ ॥ तारि ॥ वांछितफरुपायावे ॥
॥ ५० ॥ भवार्णवीतारिता ॥ नदसरा ॥ ननासमजावे ॥ बापा ॥ १ ॥ का ॥
॥ मक्रोधमदमस्तमगरहे ॥ गिळितिलजाणावे ॥ बापा ॥ २ ॥ समाप्त ॥
॥ २० ॥ राम ॥ १६ ॥

॥पद॥

॥ गावे ॥ हरिहरकीर्तनगारे ॥ नाशकपंकनगारे ॥ सोडाडुल्लगारे ॥ ॥
॥ हाचिंतुत्मासिदगारे ॥ हरिहरनामकमंत्रकालपुरीसद्वारे ॥ १ ॥ रवारे ॥

॥ नामामृत फळ रवारे ॥ सत्रित्यनवळ रवारे ॥ होइ लईश सखा ॥
 ॥ रे ॥ लाधसि सर्वसुखारे ॥ जनन मरण भव दुष्कृत याची नरु गेभीति ॥
 ॥ नखारे ॥ २ ॥ हारे ॥ हरिहर चरित पहारे ॥ सलंगसिलहारे ॥ रव्यात नघा ॥
 ॥ तनहारे ॥ सड्मातरहारे ॥ नकळे तरिसद्गुरुसि विचारुनि सांगेत्या ॥
 ॥ सबहारे ॥ ३ ॥ नारे ॥ वळवा स्वमनारे ॥ जावे सन्नमनारे ॥ नपहा दुष्ट ॥
 ॥ जनारे ॥ नभ्रमणे विपिनारे ॥ धरुन हृदये अविनाश सतत भज जग ॥
 ॥ तीत्रय भुवनारे ॥ ध्याधारे ॥ गगननिगमाधारे ॥ भृतदयानवधारे ॥ ॥
 ॥ सकल वचन सुधारे ॥ विद्यानिता विद्यारे ॥ गुरु प्रसादे आत्मज्ञाना ॥
 ॥ मृतपयसे बुनिधारे ॥ ५ ॥ कुभवाये ॥ ध्याहो श्रीशभवा ॥
 ॥ रे ॥ संतजनाने सलवा ॥ वारे ॥ सेवया जगदीश प्रार्थि
 ॥ तवे कटकविहिनवारे ॥ ६ ॥ रामराम सुम ॥ ७ ॥ २१ ॥ ८ ॥



॥ भोलाशंभोदिगांबर संकटी पावमळारे ॥ ४ ॥ व्याघ्रकडासन कर्णीवाता ॥
 ॥ शनमस्तकी इंद्रुकळारे ॥ भोला ॥ १ ॥ धत्तूरितंडुल श्रीदलचंदनमस्तकी ॥
 ॥ गंगाधरारे ॥ भोला ॥ २ ॥ दक्षांकी हेरंबा सव्यांकी जगदंबा सन्मुखनंदी उभा ॥
 ॥ रे ॥ भोला ॥ ३ ॥ शमशानवासी निस्य उदासी सभेसिभुत गणसारे ॥ भोला ॥
 ॥ ४ ॥ सज्जन दुर्जन रावनिनिर्धन भक्तीसमानधरारे ॥ भोला ॥ ५ ॥ नारद ॥
 ॥ तुंबर श्रीशपुरंदर गातीतवाग्निलिल्लारे ॥ भोला ॥ ६ ॥ त्रिभुवनपालात्रि ॥
 ॥ दशनृपाला अंकटवंदितुळारे ॥ भोला ॥ ७ ॥ ॥ संपूर्ण ॥ राम ॥ २२ ॥ ८ ॥

(12)

॥ ७ ॥

॥ पद ॥

॥ साजणी गे माझे मनिचे हित गुज हे ऐके बाई ॥ ४ ॥ लाज काय धरुनी आता ॥
॥ भयलौकिक करणे काई ॥ वेधलेच मान समाझे नचके हे दुसरे ठाई ॥ होइ नरा ॥
॥ माची दासी ॥ भावे वंदि न पादासी ॥ स्वशिरामी ठेवि न पाई ॥ साजणी ॥ १ ॥ कां ॥
॥ महेशचापचढायापणकेला माझ्या ताते ॥ रामचंद्र ओदिसके सा नवपक्षु वको ॥
॥ मल हाते ॥ नवसातुन्नि सांबेशियाते ॥ नवसारसलाचनयाते ॥ नुचलोपरिव ॥
॥ रिले अपुले ठाई ॥ साजणी ॥ १ ॥ ॥ यामनाति पालामायाद्वारकार्मुकपाणीरा ॥
॥ जा ॥ कामनाचि दुसरी नाई ॥ जा ॥ सकळातुन्नि गाजाबा ॥
॥ जा ॥ नकरामाने सबदाजा ॥ ॥ ॥ साजणी ॥ २ ॥ पाहतांचि
॥ राघवडो कामनत प्रयशाले ॥ प्रेमविसावा मजजाली नजगी ॥
॥ लाजे ॥ रमते मन देव न रामी ॥ न नरामी ॥ अणतो आनंदसूता ॥
॥ चास्वामी ॥ साजणी ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ ४ ॥ राम् ॥ ४ ॥

॥ कैकाडीण थोरली ॥

॥ अलक्षपूरन गरतथे आत्मारहीवास ॥ सहजबीजकेले दादाशकुनसां ॥
॥ गायास ॥ अस्त्राविल्ल रुद्रशकुनपुसती आत्मास ॥ काहीयेकनिदानदादा ॥
॥ सांगीतले त्यास ॥ १ ॥ कैकायमाझा दूरला होदेश ॥ राहतो आस्त्रीपरात्पर ॥

॥ स्वसुरेसंतोष ॥ ४० ॥ निर्गुणनिराकारदादामाहेरमाझेगांव ॥ तयेनग ॥
 ॥ रीवस्तीकेलीयमाइमाझेनाव ॥ राकुनसांगाचयादादाअलेयेक्याभावे ॥
 ॥ ऐसामाझाशकुनदादाचिनदेउनिपरिसावे ॥ २ ॥ ब्रह्माविष्णुरुद्रमजदे ॥
 ॥ स्वताचिउत्पत्तीहोती ॥ आकाशधरित्रीमजदेस्वताचिउत्पत्ती ॥ चंद्र ॥
 ॥ आणिसूर्यमजदेस्वताचिजन्मती ॥ जथेआदेशिवतथेनिर्मायेलीशक्ती ॥
 ॥ ३ ॥ प्रथमचिमीतोदादाकेबलहीनझाले ॥ श्रीस्वानंदेकुरकुलिघेउनराकू ॥
 ॥ नसांगोआले ॥ जेजेथेथेचनेअवघेचंचले ॥ पाहताघडीमोडीनाहीस्व ॥
 ॥ रूपहालवले ॥ ४ ॥ काकी ॥ देसाबकाई ॥ मर्याईकुमडिन ॥
 ॥ हेवहाईनरसाईवामन ॥ ईरुण्णाई ॥ बौडाइकलंकाई ॥
 ॥ नहेराकुनसांगुकाई ॥ ५ ॥ ॥ शारेंदोकावीपरी ॥ पुनपीतया ॥
 ॥ चादादाहोईलहोवैथी ॥ भ्रतार ॥ श्रीहिंडविलघरोघरी ॥ ऐसामा ॥
 ॥ झाशकूनदादामानाबनि ॥ अवादीसमुगेशाहाचक्रवर्ती ॥
 ॥ ऐसेकोरवपांडवदादागेलेनभेकिती ॥ छुपकोटीयादवाचीकोणझालीगती ॥
 ॥ तुस्तीआस्तीजाऊदादाकोणीनराहती ॥ ७ ॥ अणीकएकदादामाझाएका ॥
 ॥ वाबोल ॥ बहीणभावासीदादाविवाहहोईल ॥ पांचवरुपाचीदादाभ्रतारमा ॥
 ॥ गेल ॥ सातवरुपाचीदादागर्भिणहोईल ॥ ८ ॥ दाहाअवतारमजदेस्वताची ॥
 ॥ झाले ॥ आकराहीरुद्रदादाहोऊनियागेले ॥ कितियकगणगंधर्वमजदेस्वता ॥
 ॥ चिनीमाले ॥ अठ्याऐशीसहस्रऋषीहोऊनीयागेले ॥ १० ॥ दिसजेजेतेतेसुर
 ॥ सांगोअत्ताकिती ॥ चवदामन्तरेनीहीभुरहोउनिजाती ॥ चंद्रसूर्यक्षणांमा ॥
 ॥ जीभुरहोताती ॥ पाहताअवघेभुरपाहाअनुभवचिती ॥ १० ॥ ऐसामाझादाकू ॥

॥ नदादा माना वासंती ॥ एका जनार्दनी अंबा प्रसन्न भगवती ॥ मूळपीठी राहे ॥
॥ माझे नाम आदी शक्ती ॥ अंबेसी शरण त्या लाभकी आणि सुक्ती ॥ ११ ॥ कैका ॥
॥ यमासा दूर ला हो देश ॥ बाहो आत्मी परात्पर स्वस्वर संतोष ॥ १२ ॥ ॥ ॥
॥ समाप्त ॥ ॥ २४ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ श्रीराम समर्थ ॥ ॥ १४ ॥ ॥

॥ कोलाटी ॥

॥ महाप्रपंचरो विलंबकु ॥ अस्मा विष्णु जयाचे ॥
॥ बाळु ॥ अगाधलीका अगा ॥ कोलाटीण रेवका या ॥ चला जा ॥
॥ उपहाया ॥ ११ ॥ त्रिगुणा ॥ सोहं गड टोल गे पिटी ॥ ॥
॥ शिवसांबाचि उघडकी दृष्टी ॥ आया ॥ अलकोलाटीण ॥ २ ॥
॥ कोलाटीण बेसली डोका ॥ अगाधलीका ॥ अगाधलीका ॥ गुरुपुत्र जाणतो ॥
॥ कका ॥ अगाधलीका अगाधलीका ॥ अलकोलाटीण ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥
॥ श्रीराम जयराम जयजयराम ॥ ॥ २५ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥

॥ पदजगदंबेवेशिबदिनक ॥

॥ लक्ष्मिजगदंबाजगदंबा ॥ ममकुलदेवत अंबा ॥ १६ ॥ शामचतुर्भुजम् ॥
॥ तीर्ती ॥ दोहीजेका भरली पुर्ती ॥ लक्ष्मी ॥ १७ ॥ आंतबाहेर साची ॥ ओति ॥

॥ बपुतकी ब्रह्मरसाची ॥ लक्ष्मी ॥ २ ॥ शिवदिनवाळकपाळी ॥ भाकि ॥
 ॥ भांगटिकक झळाळी ॥ लक्ष्मी ॥ ३ ॥ ॥ समाप्त ॥ २६ ॥ राम ॥ ६९ ॥

॥ पद ॥

॥ रघुवंशिराजारामकनैया ॥ दारापमुतवसुदेवकी छव्या ॥ ४ ॥ अयो ॥
 ॥ ध्याकेनायकमथुराकेवासी ॥ धनुषीराममुलीप्रभ्यासी ॥ रघु ॥ १ ॥
 ॥ रावनमारोकंसपक्षारो ॥ विजयनतारो कुरउधारो ॥ रघु ॥ २ ॥ अहि ॥
 ॥ ल्याजोतारीकुजउधार ॥ बनहारो ॥ रघु ॥ ३ ॥ सिता ॥
 ॥ पतिरामजीलईमीपती ॥ भुअंतपत्नी ॥ रघु ॥ ४ ॥ संपू ॥
 ॥ श्रीरामप्रसन्न ॥ २७ ॥



॥ दुग्दुग्दुग ऐकानाना ॥ यथुनतुअबरे होइल ॥ पुढेभक्ति सखेदोंदवाढेल ॥
 ॥ फेराकर्मचारंडेल ॥ धन्यमोकासी ॥ अलोरायाचाजोशी होरा ऐका ॥ ४ ॥ १ ॥
 ॥ मनाजिपाटिलेदेहगाविचा ॥ विश्वासधरूनयेत्याचा ॥ घातकरीलनेमा ॥
 ॥ चा ॥ पडालफाशी आलोरायाचाजोशी होरा ऐका ॥ २ ॥ वासनाबाइलशे ॥
 ॥ जारीण ॥ झगडाफुटेमोवादांरुण ॥ तिच्यापारनागवण ॥ घरबुडवीसी ॥ ॥
 ॥ आलो ॥ ३ ॥ एकाजनार्दनजोशी ॥ होरासांगतो लोकासी ॥ फेरानुकचा ॥
 ॥ चौआऐंशी ॥ सद्गुरुचरणी ॥ आलो ॥ ४ ॥ समाप्त ॥ २६ ॥ ॥ राम ॥ ६९ ॥

॥ पिंगळा ॥

॥ वैले आळिच्या नो ॥ तुम्हि सावध हावे ॥ पाटिल बोवाला ॥ जाउन सांगा ॥
 ॥ वे ॥ येइल मुळ चिठी ॥ मग पडेल ठावे ॥ १ ॥ पिंगळामहादारी ॥ बोलिबो ॥
 ॥ लतोदेखा ॥ उबूल फिरतो ॥ तुम्हि दुगुगुगु एका ॥ पिंगळामहादारी ॥ ४ ॥
 ॥ २ ॥ आणिक येक चाराहाल सरेल ताती ॥ पाटिल निजताती ॥ तीप ॥
 ॥ डेलमाडी ॥ त्यातिल पाचपे ॥ पिंगळामहादारी ॥ ३ ॥
 ॥ तुमच्या गावात येक ॥ बा ॥ साधालकी ॥ मग पडेल पु ॥
 ॥ रे ॥ नाहितर पाळला जी ॥ गुरे ॥ पिंगळा ॥ ४ ॥ तुमचे ॥
 ॥ गावांत एक ॥ नवल्ले कीले ॥ घाने ॥ त्या पाटलास बुडवी ॥
 ॥ ले ॥ अवघे कागदाचे ॥ ए ॥ पिंगळा ॥ ५ ॥ इतुक एका ॥
 ॥ ना ॥ मग दुसरा येइल ॥ दखत दरत बा ॥ घेउन जाईल ॥ निको बाबो ॥
 ॥ लिबोलले ॥ हित मासे काय गेले ॥ पिंगळामहादारी ॥ ६ ॥ समाप्त ॥
 ॥ श्रीराम जयराम जयजयराम ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

॥ दाविसिपायकधी ॥ दयाळा ॥ ४ ॥ पोहवेनामज उहसरवालहा ॥ वाहक ॥
 ॥ भवजलधी ॥ दयाळा ॥ १ ॥ बौहवलोकिति पाहसीदेशिक ॥ तू करुणा ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com